www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

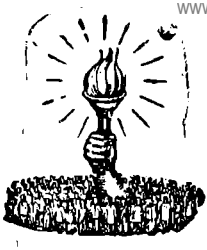

अन्तर्ग्रहीय परिस्थितियों के पर्यवेक्षण की वेधशाला

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—ब्रह्मवर्चस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्तर्ग्रही परिस्थितियों के पर्यवेक्षण की वेधशाला

यह समूचा ब्रह्माण्ड एक परिवार है। अनेकानेक ग्रह-नक्षत्र उसके सदस्य हैं। यह सब एक सूत्र-शृंखला में बँधे और एक-दूसरे के साथ जुड़े-जकड़े हुए हैं। इतना ही नहीं उनके बीच अति महत्वपूर्ण आदान-प्रदान भी चलते हैं। यदि वे सर्वथा स्वतंत्र और पृथक् होते तो उनका अस्तित्व तक न बन पाता और न टिक पाता। अपने सौर मंडल के ग्रह-उपग्रह न केवल सूर्य के साथ जुड़े-बँधे हैं, वरन् उससे बहुत कुछ प्राप्त भी करते हैं। पृथ्वी को यह अनुदान अधिक सुसंतुलित मात्रा में मिलता है, इसी से वह अधिक विकसित भी हो सकी है। पृथ्वी को सूर्य से सौर-मंडल के सदस्यों से ही नहीं, ब्रह्माण्ड के अन्यान्य ग्रह-उपग्रहों से भी बहुत कुछ प्राप्त होता है, तभी उसकी स्थिति अद्भुत, अनुपम एवं सुविकसित स्तर की बनी हुई है।

पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव अन्तर्ग्रही शक्तियों को खींचता है। ब्रह्माण्ड में गतिशील अति महत्वपूर्ण सूक्ष्म सम्पदा सर्वप्रथम उसी ध्रुव केन्द्र के हाथ लगती है। उसमें से जितना अंश उपयोगी होता है, धरती सोख लेती है; शेष को दक्षिणी ध्रुव के माध्यम से फिर अन्तरिक्ष में धकेल दिया जाता है। पृथ्वी का जितना अपना वैभव, उत्पादन है, उसकी तुलना में उसे अन्तर्ग्रही भण्डार से कहीं अधिक मात्रा में उपलब्ध होता रहता है। अन्यान्य ग्रह-नक्षत्रों से पृथ्वी को बहुत कुछ मिलता है इससे वह अत्यधिक प्रभावित होती है। यह प्रभाव भले भी होते हैं और बुरे भी। वे प्राणियों, पदार्थों, वनस्पतियों को, विशेषतया संवेदनशील मनुष्य को प्रभावित करते हैं। उस प्रभाव से समूचे वातावरण में उथल-पुथल होती रहती है; यह कई बार उपयोगी भी होती है और कभी-कभी प्रतिकूल प्रभाव भी डालती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन प्रभावों को जानने की विद्या का ज्ञान ज्योतिष है। उसके द्वारा यह पता चलता है कि ब्रह्माण्ड में अवस्थित ग्रह नक्षत्रों की कब कहाँ कैसी स्थिति है ? सौर मण्डल के ग्रह उपग्रह पृथ्वी के अधिक निकट हैं तथा परस्पर अधिक सघनता के साथ आवद्ध भी हैं, इसलिए उनका प्रभाव और भी अधिक पड़ता है। अन्तरिक्षीय घटनाक्रम की पूर्व जानकारी रहने से हम आये दिन अपनी व्यवस्था बनाते-बदलते रहते हैं। सर्दी, गर्मी, वर्षा अन्तरिक्षीय हलचलें हैं। इनकी पूर्व जानकारी रहने से हमारी कितनी ही योजनाएँ बनती-बदलती रहती हैं ; आँधी-तूफान का पूर्वाभास होता है, बचाव का कुछ न कुछ प्रबन्ध करते हैं। रात और दिन भी तो ऐसी उथल-पुथल के कारण आते-जाते रहते हैं। प्रत्यक्ष है कि हम सब इन कारणों से कितने अधिक प्रवावित होते हैं। हमारा श्रम, समय मस्तिष्क की अधिकांश क्षमता इन अन्तरिक्षीय प्रभावों से बचने और लाभान्वित होने में लगी रहती है। समृद्धि का भी हलचलों के साथ गहरा सम्बन्ध है। वर्षा के न्यूनाधिक होने से मनुष्य की सुख-समृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। बाढ़ और दुर्भिक्ष की विनाश लीलाएँ ऊपर से ही उतरती हैं।

यह ज्ञात विषय है। मनुष्य के स्वास्थ्य संतुलन एवं वैभव को भी अन्तर्ग्रही स्थिति असाधारण रूप से प्रभावित करती है। इस संदर्भ में जिन्हें अधिक गहरी जानकारी है वे समझते हैं कि पृथ्वी का वैभव ही सब कुछ नहीं है। अन्तरिक्षीय वातावरण पर भी मनुष्य की अनुकूलता प्रतिकूलता बहुत कुछ निर्भर करती है। स्वाभाविक है कि इस सन्दर्भ में अधिक जानने की इच्छा हो और उस आधार पर दुष्प्रभावों से बचने और सत्प्रभावों से लाभान्वित होने का मन चले। इस जिज्ञासा का समाधान ज्योतिष शास्त्र के सहारे ही हो सकता है। अस्तु उसका महत्व विज्ञान की अन्याय धाराओं से कम नहीं माना गया।

धरती और समुद्र से सम्पदा सुविधा उपलब्ध करने भर से मनुष्य का काम नहीं चला; अब वह अन्तरिक्ष में बिखरे वैभव को समेटने के लिए आतुर है। वायुयानों से सन्तोष नहीं हुआ। पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमने वाले उपग्रहों और अन्तर्ग्रही यात्रा पर निकलने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राकेटों पर प्रचुर धन साधन एवं बुद्धि कौशल नियोजित किया जा रहा है। इस आधार पर कि आकाश में विद्यमान अन्तरिक्षीय प्रभाव वैभव में से और कुछ उपलब्धियाँ हाथ लगे, सुरक्षा के अधिक उपाय सूझ पड़ें यह सब खगोल विद्या के सहारे हो रहा है। खगोल की अन्तरिक्ष विद्या का नाम ही ज्योतिष है। उसमें ग्रहों की चाल तथा पारस्परिक घात-प्रतिघात के आधार पर बनने-बिगड़ने वाले तारतम्य को देखते हुए यह पता लगाया जाता है कि उन हलचलों का पृथ्वी पर कब, कैसा, कितना प्रभाव पड़ेगा। वह किसके लिए किस प्रकार उपयोगी या अनुपयोगी सिद्ध होगा, कहना ना होगा कि पूर्वाभास के आधार पर मनुष्य को बहुत कुछ सोचना पड़ता है। मात्र तत्काल बुद्धि ही पल्ले बँधी होती, तो मनुष्य की स्थिति पशु-पक्षियों तथा कृमि कीटकों की तुलना में तनिक भी उत्तम न रह सकी होती।

ग्रहों की स्थिति का पृथ्वी के वातावरण, प्राणिजगत, वनस्पति वैभव विशेषतया मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी को ज्ञान सम्पदा के किसी भी पक्ष से कम महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। अतएव ज्योतिष को भी दिव्य चक्षुओं में एकमात्र माना गया है और उसे ब्रह्माण्ड के साथ आदान-प्रदान का द्वार खोलने वाली खिड़की कहा गया है।

इस विज्ञान में ग्रहों की स्थिति जानना सर्वप्रथम काम है। इसके लिए इन दिनों तो बहुमूल्य यंत्र-उपकरणों से सुसज्जित ऑब्जर्वेटरियाँ लगायी गई हैं और बहुत कुछ जानने का प्रयत्न चल रहा है। आश्चर्य उन दिनों का है जब बहुमूल्य यंत्र उपकरण नहीं थे और तत्वदर्शियों ने अपनी विलक्षण प्रज्ञा के सहारे ईंट-पत्थरों से वेधशालाएँ खड़ी करके वैसी ही सही उपलब्धियाँ हस्तगत की थीं, जैसी कि इन दिनों अन्तरिक्ष विज्ञानी सुविकसित विज्ञान साधनों के सहारे हस्तगत करते हैं।

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान सचेतन अन्तर्ग्रही प्रभावों के सूक्ष्म परिणामों की उच्चस्तरीय जानकारी से सम्बद्ध है, जबकि विज्ञानी मात्र स्थूल ग्रह प्रभावों को ही समझ पाते हैं। दुर्भाग्य इस बात का है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि भारतीय ज्योतिर्विज्ञान प्रतिगामिता और निहित स्वार्थों के कुचक्र में पड़कर उपहासास्पद स्थिति वाले गर्त में जा गिरा। भाग्यवाद भविष्य कथन अनिष्ट-अनिष्ट जैसी विडम्बनाएँ उसके साथ जुड़ गईं। इसके अतिरिक्त उसके सही स्वरूप निर्धारण करते रहने के लिए जो समय-समय पर किया जाना था, उसे भी आलस्य तथा अज्ञान के कारण उपेक्षित कर दिया गया।

सर्वविदित है कि पृथ्वी न तो पूरे २४ घन्टे में अपनी धुरी पर घूमती है और न ३६० दिन में सूर्य की परिक्रमा करती है; यह निर्धारण कामचलाऊ है। कुछ मिनट सैकेण्ड का अन्तर पड़ते रहने से कुछ शताब्दियों बाद ऐसी स्थिति आ जाती है कि उस अन्तर को दृश्य गणित के आधार पर शुद्ध किया जाय। यों तिथियों के महीनों के क्षय-वृद्धि के आधार पर थोड़ा बहुत संतुलन बिठाया जाता रहता है, फिर भी अन्तर बढ़ता ही जाता रहता है। इसी परिशोधन के लिए दृश्य गणित काम में लाया जाता है और वेधशालाओं के माध्यम से वर्त्तमान स्थिति को देखकर पुरातन आधार पर बनते आ रहे पंचांगों में सुधार करना पड़ता है। खेद की बात है कि इन दिनों दृश्य गणित के आधार पर चलने वाली संशोधन-प्रक्रिया की ओर भारतीय ज्योतिर्विदों का ध्यान मुड़ ही नहीं रहा है।

मध्यकाल में इस विद्या के, भारतीय विद्या के विशेषज्ञों ने नये उत्साह से इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण निर्धारण किये थे। दिल्ली, जयपुर, वाराणसी, आदि में वेधशालाएँ बनी थीं और सुधार क्रम का कुछ सिलसिला चला था। दुःख है कि वह करवट फिर कुम्भकर्णी निद्रा में सपा गई।

आवश्यक समझा गया कि ब्रह्मवर्चस् की शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत भारतीय ज्योतिष शास्त्र को पुनः प्राचीनकाल जैसी स्थिति में लाया जाय। इस हेतु सर्वप्रथम पुरातन आधार पर वेधशाला बनाने का निश्चय किया गया। शान्ति-कुंज में इसका निर्माण हुआ है। उसमें प्रायः उन सभी गणित उपकरणों को विनिर्मित किया गया है, जो भारतवर्ष में कहीं भी विद्यमान हैं एवं आज की स्थिति में आव-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्यक है। यह अपने ढंग की अनोखी वेधशाला है, जो आकार में छोटी होते हुए भी प्राचीनकाल के महान गणितज्ञों द्वारा अपनाये जाने वाले प्रायः सभी महत्वपूर्ण उपकरणों से सम्पन्न है।

इन्हीं दिनों यह प्रयोगशाला इसलिए बनानी पड़ी कि युग सन्धि के इन बीस वर्षों में—सन् १९८० से २००० तक की अवधि में संसार में बहुत भारी उथल-पुथल होने की सम्भावना है। उसमें मनुष्यगत हलचलें कम—दैवी उथल-पुथल अधिक बड़ी भूमिका सम्पन्न करेगी। अगले दिनों ग्रहणों की शृंखला, सूर्य कलंक, धूमकेतु आदि के प्रत्यक्ष, और विक्षुब्ध प्रकृति के अप्रत्यक्ष प्रकोप ऐसे हैं, जिन्हें अन्तरिक्षीय पर्यवेक्षण के आधार पर ही जाना जा सकता है, अस्तु, ब्रह्मवर्चस् शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत ज्योतिर्विज्ञान अनुसन्धान का तन्त्र खड़ा किया गया है।

इस आधार पर नया पंचांग भी प्रकाशित किया जा रहा है, जो दृश्य गणित के आधार पर ग्रह नक्षत्रों की सही स्थिति प्रकट कर सकने में समर्थ होगा। अब नवग्रहों में नेपच्यून, प्लेटो और यूरेनस यह तीन ग्रह और जुड़ गये। नये पंचांग में उनका भी समावेश रहेगा और उनकी स्थिति का भी पुराने ग्रहों की तरह ही गणित किया जाता रहेगा।

मनुष्य पर ग्रह दशा का क्या असर पड़ना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि जन्म—समय का इष्ट सही हो। इसे सही रखने और कुण्डली बनाने के लिए स्टैण्डर्ड टाइम नहीं वरन् स्थानीय समय का सूर्योदय काल चाहिए। इन दिनों जो पंचांग छपते हैं, प्रकाशक या लेखक के स्थान की पलभा पर ही बने होते हैं। जबकि पंचांग गणित उस स्थान का होना चाहिए, जहाँ कि बालक जन्मा है। आजकल ऐसा नहीं होता है। जोधपुर के पंचांग पर कलकत्ते में जन्मे बच्चे की कुण्डली बनती है। होना यह चाहिए कि स्थानीय पंचांग विनिर्मित होते और उसी आधार पर इष्ट अथवा लग्न का निर्धारण होता? यह विद्या एक प्रकार से लुप्त हो चली, जो जानते हैं वे परिश्रम नहीं करते। इस कमी को दूर करने के लिए ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पचांग में समूचे आधार का उल्लेख किया जा रहा है ताकि कोई भी ज्योतिर्विद स्थानीय पंचांग बना सके और सही जन्म कुण्डली बनाकर उस आधार पर सही निष्कर्ष निकाल सके। इसे ज्योतिष् क्षेत्र की एक नई उपलब्धि ही कहा जाना चाहिए।

युग सन्धि की इस पुभीत बेला में कितनी दिव्य आत्माएँ जन्मी तथा बढ़ रही हैं। उन्हें युग परिवर्तन के समय विशेष भूमिकाएँ निभानी हैं, ऐसे संस्कारवान् देव मानव पूर्व जन्मों की विभूतियाँ साथ लाये होंगे, तो ही यह सम्भव होगा कि वे इन दिनों कोई बड़ा उत्तरदायित्व सँभाल सकें। ऐसी आत्माओं को खोजने और उन्हें परिष्कृत करने की ठीक वैसी ही आवश्यकता पड़ रही है, जैसी कि दशरथ पुत्रों की, दिव्य विशेषताओं का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करके विश्वामित्र उन्हें आग्रह पूर्वक प्रशिक्षण के लिए ले गये थे। विवेकानन्द, शिवाजी, चन्द्रगुप्त आदि को उनके दिव्यदर्शी गुरुओं ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से खोजा था और उन संस्कार सम्पदा वालों को तनिक से प्रयास से उभार कर बड़े-बड़े प्रयोजनों को पूर्ण कराया था।

इन दिनों शान्ति-कुंज में जन्म कुण्डलियाँ देखने, बनाने में रुचि इसीलिए ली जा रही है कि व्यक्तियों के स्तर तलाश कर उनकी पूर्व सचित सम्पदा तथा वर्त्तमान विशिष्टता का सही अनुमान लगाया जा सके और उन्हें उत्साह–सहयोग देकर समयानुसार उनसे उच्चस्तरीय प्रयोजन सम्पन्न कराने का सुयोग बिठाया जा सके।

यह विभीषिकाओं का युग है। उसमें मानवी गतिविधियाँ तो उथल-पुथल के लिए प्रधानतया उत्तरदायी हैं ही, पर कुपित प्रकृति की भूमिका भी कम खतरनाक नहीं है। इस सन्दर्भ में पूर्वाभास होने की स्थिति में बचाव के कुछ उपाय सोचना और कुछ मार्ग निकालना सम्भव हो सकता है। ऐसे अवसरों पर अन्तर्ग्रही अनुदान भी विपत्ति को टालने और सुखद सम्भावनाओं का पथ-प्रशस्त करने में सहायक हो सकते हैं। ऐसा तारतम्य बिठाने में भारतीय ज्योतिष के आधार पर ऐसी सूक्ष्म जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, जैसी कि भौतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान के आधार पर विनिर्मित एस्ट्रोनोमी के यन्त्र उपकरणों से सम्भव नहीं ।

भारतीय ज्योतिविज्ञान में मात्र अदृश्य का पूर्वाभास ही एक लाभ नहीं है, वरन् अनिष्टों के निवारण और शुभ सम्भावनाओं के आकर्षण अवतरण का आधार भी विद्यमान है । युग सन्धि के दिनों में ऐसे अदृश्य सहयोग की असाधारण आवश्यकता है, जो विनाश के कगार पर खड़ी हुई मानवी सभ्यता एवं धरती को उबार सकने का आधार अवलम्बन बन सके ।

सामान्य व्यक्तियों को भी इस आधार पर कुछ न कुछ कहा—बताया ही जा सकता है । अशुभ से बचाने और शुभ की ओर इंगित करने पर डूबते को तिनके का सहारा मिल सकता है । राई को पर्वत बनने का ऐसे ही कारणों से सुयोग बनता है । ऐसे अनेक कारण हैं जिन्हें ध्यान में रखते हुए शान्ति-कुंज में ज्योतिर्विज्ञान की वेधशाला खड़ी गई है और अनुसन्धान के लिए विशिष्ट तत्परता दिखाई गई है ।

शान्ति-कुंज की वेधशाला में जो यन्त्र उपकरण लगे हैं, उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं । (१) पलभा यन्त्र (२) मकर वलय (३) कर्क वलय (४) नाड़ी वलय (५) उन्नतांश यन्त्र (६) चक्र यन्त्र (७) कपाल यन्त्र (८) दिगंश तन्त्र (९) भित्ति यन्त्र (१०) आधुनिक दूर-वीक्षय यन्त्र (टेलीस्कोप) ।

इनका उपयोग किस ग्रह गणित के लिए किस प्रकार किया जाता है । यह समझना–समझाना उन्हीं के लिए सरल पड़ेगा, जिन्हें ज्योतिष विज्ञान की पूर्व जानकारी है । साधारण व्यक्ति इस विभाग के मार्गदर्शक से मिलकर, जितनी समझी जा सके उतना समाधान कर सकते हैं ।

प्रका० मुद्रक:–युगान्तर चेतना प्रेस,शान्ति-कुन्ज हरिद्वार । मू० ३५ पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org